ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-3* April-2017
Innovation The Research Concept

साहित्यिक दृष्टिकोण से मुरादाबाद की पृष्ठ भूमि

मिथलेश सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
के0 जी0 के0 महाविद्यालय,
मुरादाबाद

सारांश

मानव जीवन प्रगति को एक लम्बी यात्रा है जो न कभी समाप्त हुई है, न होगी। जीवन की जटिलता बढ़ती जा रही है, और बढ़ रही है, क्लन्ति, तनाव, थकान व टूटन। इस लिये शरीर की पुष्टता और दारित के बाबजूद कुछ महान विभूतियों की आत्मा किसी हद तक विपन्न अथवा भूखी है। आज मुरादाबाद के कुछ चितेरों के गहरे तथा स्पष्ट पद चिन्ह दिखलायी पड़ते है।

मुख्य शब्द : साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक

प्रस्तावना

सर्वविदित है कि गौरवपूर्ण अतीत की नींव पर ही गौरवमय वर्तमान का भवन निर्मित होता है। मुरादाबाद जनपद की धरती पुरातनकाल से ही धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध रही है। यहाँ की धरती साहित्यकारों को जन्म देती रही है और स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकारों को स्वतंत्रतापूर्व के साहित्यकारों से गौरवमय अतीत प्राप्त हुआ है। इसी कारण इस अध्याय में मुरादाबाद जनपद के साहित्यिक परिदृश्य को दर्शाने के लिये साहित्यकारों को उनकी जन्मतिथि के आधार पर दो वर्गों–बीसवीं शती पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध के रचनाकार में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत है प्रमुख साहित्यकारों का साहित्यिक परिचय–

बीसवीं शती पूर्वार्द्ध के प्रमुख रचनाकार और उनकी प्रमुख कृतियां

स्व0 दुर्गादत्त त्रिपाठी

स्व0 दुर्गादत्त त्रिपाठी का जन्म 19 मई उन्नीस सौ छः को बरेली में हुआ था। आपके पिता पंडित गोविन्द दत्त त्रिपाठी रेलवे में इन्सपेक्टर थे। आपने काशी में रहकर प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की तथा वहाँ से कक्षा 10 की परीक्षा उत्तीर्ण की। काशी में ही आपका परिचय जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा सुमित्रानन्दन पन्त से हुआ। मुरादाबाद के ज्वालादत्त शर्मा भी आपके घनिष्ठ मित्र थे। मुरादाबाद में ही आपने रेलवे विभाग में गार्ड के पद पर सेवा की।

त्रिपाठी जी साहित्य को पूजा की भावना से देखते थे। आपने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक तत्त्वों को काव्य के बिम्बों में पूर्णतया समाहित कर लिया है। आपने चार महाकाव्य, दो खण्डकाव्य, चालीस कविता–संग्रह, पाँच उपन्यास तथा पाँच कहानी संग्रहों की रचना हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की है।

कविता को हृदय की पवित्रतम समझने वाले त्रिपाठी जी का साहित्य संतवाणी की तरह सार्वकालिक, सार्वजनिक और सार्वयुगीन है। आपके काव्य में शान्त रस की सरस धारा में रचा–वसा विश्व चिन्तन है। आप मूलतः मानवतावादी कवि हैं। आपका जन–संबोधित साहित्य एक ऐसा सुदीप्त प्रकाश पुंज्ज है जो हिन्दी साहित्य के लिए निश्चत ही एक नवीन दिशा उद्भासित करेगा।

श्री दुर्गादत्त त्रिपाठी का महाप्रयाण 30 जनवरी को मुरादबाद में हुआ।[1]

स्व0 मदन मोहन व्यास

स्व0 मदन मोहन व्यास जी का जन्म 5 दिसम्बर 1919 को हुआ था। भाव तेरे शब्द मेरे, हमारा घर आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से शास्त्री की शिक्षा ग्रहण की थी। व्यास जी, जैसा कि सर्वविदित है, मुरादाबाद के प्रसिद्ध व्यास घराने के सदस्य थे। यह परिवार अपनी साहित्य और संगीत साधना के लिए बड़ा प्रसिद्ध रहा है। कई प्रतिभाशाली लोगों ने इस परिवार में जन्म लिया है। जिनमें प्रमुख हैं प्रसिद्ध फिल्मकार व रामकथा के विद्वान श्री नरोत्तम व्यास एवं स्वयं श्री मदन मोहन व्यास।

व्यास जी एक उच्च कोटि के कवि और विद्वान अध्यापक थे। साहित्य के अलावा वे संगीत के क्षेत्र में दखल रखते थे। एक कवि के तौर पर भी व्यास जी का पदार्पण लगभग उस समय हुआ जब हिन्दी काव्य में छायावादी काव्य

रचा जा रहा था। स्पष्ट है कि व्यास जी पर भी छायावाद कर प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उन्होंने जो गीत व कवितायें लिखीं उनमें स्वतः ही छायावाद के तत्त्वों का समावेश हो गया। उनकी कविता में प्रकृति के प्रति अनुराग और रहस्यवाद को स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है।[2]

बहोरन सिंह वर्मा 'प्रवासी'

बहोरन सिंह वर्मा 'प्रवासी' जी का जन्म आश्विन शुक्ल नवमी सं0 1979 (सन् 1922 ई0) को सिरसी में हुआ था। इन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा हिन्दी में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की थी। प्रवासी सतसई, हिन्दी शब्द विनोद, मंगला, सीपज आदि इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। पतला दुबला शरीर, स्वर्णिम काया, तेजोद्दीप्त नेत्रों पर मोटे फ्रेम का चश्मा, कुर्त्ता–पाजामा और चप्पलें–कुल मिलाकर प्रवासी जी की आकृति बड़ी भव्य थी। वे दूर से देखने पर पूरे गांधीवादी दिखाई पड़ते थे। स्वभाव से अत्यन्त विनम्र किन्तु पूरे सिद्धान्तवादी। अनुचित को कभी सहन नहीं किया और अन्याय के प्रति अपनी वाणी से ही नहीं कलम से भी आजीवन संघर्षरत रहे। एक विचित्र किस्म का अक्खड़पन भी उनमें था ठीक वैसा ही जैसा धूमिल में था। व्यवस्था की विसंगतियों से भिड़ने को सदैव तत्पर।[3]

स्व0 शंकरदत्त पाण्डेय

शंकर दत्त पाण्डेय का जन्म 10 जनवरी 1925 को लोहा गढ़ जिला मुरादबाद नामक स्थान पर हुआ था। उन्होंने स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। वे एक बहुत ही महान रचनाकार थे। वह एक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वह यथार्थ को जीने वाले एक सफल रचनाकार थे। उनका स्वर्गवास 2004 को दीपावली के दिन हुआ था।

उनका मुरादबाद के हिन्दी साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। वह बहुत ही महान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। उनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं। झलक (काव्य–संग्रह), हंसते–गाते (कविता–संग्रह), मधुऋतु चली गई, शेष पथ कैसे कटेगा, महावर कौन रचेगा (गद्य–काव्य), संवेदना के दर्द, सौन्दर्य का आचमन (कहानी–संग्रह), हमराही, पिंजरा (बाल–साहित्य), दस उपन्यास, आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।[4]

स्व0 डॉ0 कान्ति त्रिपाठी

आपका जन्म एक प्रतिष्ठित कुँमाऊनी परिवार में 25 मई 1925 को रामपुर में हुआ था। आपके पिता पं0 टीकादत्त त्रिपाठी एक सुविख्यात वैद्य थे। डॉ0 कान्ति त्रिपाठी की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा मुरादबाद में सम्पन्न हुई। 1955 ई0 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आपने हिन्दी विषय में एम0ए0 किया। अध्ययनकाल में आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की अभिन्न अंग रही। आकाशवाणी लखनऊ से अनेक बार आपकी कविताओं और वार्ताओं का प्रसारण हुआ। विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागके तत्कालीन अध्यक्ष डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा एवं रीडर डॉ0 रामकुमार वर्मा आपकी साहित्यिक प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे। सुप्रसिद्ध कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा से भी आपका अंतरंग परिचय इलाहाबाद में ही हुआ। आगरा विश्वविद्यालय ने 1967 ई0 में 'हिन्दी नाट्य साहित्य में कविता और गीत का प्रभाव (भारतेन्द्रु से प्रसाद तक) विषय पर मौलिक शोध के लिए आपको डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया।

1956 में आपने गोकुलदास गर्ल्स कालेज मुरादाबाद में हिन्दी व्याख्याता का पद् ग्रहण कर 1968 तक निर्बाध शिक्षण कार्य किया। उसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत गार्गी कॉलेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से 1991 में सेवानिवृत्ति प्राप्त की।[5]

11 अप्रैल, 1994 को 69 वर्ष की आयु में मुरादाबाद के पैतृक निवास स्थान में आपका पार्थिक शरीर शेष हुआ।

जीवन काल में आपके दो गद्य गीत संग्रह 6जीवन–दीप' (1958) और ऊष्मा (1979) ही प्रकाशित हो पाए। सम्प्रति दो काव्यगत रचनाएं– 'संतरण' एवं 'तरंगिणी' आपके परिवार के सहयोग से प्रकाशित हुई हैं।

स्व0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल

कविवर कैलाशचन्द्र अग्रवाल का जन्म मुरादाबाद में 18 दिसम्बर सन् 1927 को हुआ था। इनके पिता साहू रामेश्वर शरण अग्रवाल थे। कैलाशचन्द्र ने लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् 1950 में हिन्दी से एम0ए0 किया। सन् 1952 में के0जी0के0 कालेज मुरादाबाद से एल0एल0बी0 की परीक्षा उत्तीर्ण कर कर्मक्षेत्र में पदार्पण किया।

कवि कैलाशचन्द्र स्वभाव से बहुत कोमल विनम्र और मधुर थे। उन्होंने कविता व गीत रचना स्वांतः सुखाय की है। परिणाम और गुणवत्ता दोनों ही दृष्टि से उनका गीतिकाव्य हिन्दी साहित्य की अक्षय धरोहर है। उन्होंने लगभग 600 गीत और 500 मुक्तक लिखे। उनकी प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं–

गीत संग्रह

1. सुधियों की रिमझिम में (1964)
2. प्यार की देहरी पर (1981)
3. आस्था के झरोखों से (1984)
4. तुम्हारे गीत तुम्हीं को (1985)
5. तुम्हारी पूजा के स्वर (1989)
6. मैं तुम्हारा ही रहूँगा (1993)

मुक्तक–संग्रह

1. अनुभूति (1992)

कवि कैलाशचन्द्र अग्रवाल मंचीय कवि रहे हैं। वे अपने मधुर सरस्वर काव्य पाठ के लिये सुविख्यात थे। किन्तु कवि ने अहसास किया था कि मंच सस्ती लोकप्रियता का स्थान बनते जा रहे हैं जहाँ अपरिष्कृत रूचि के श्रोता जुटने लगे हैं, अतः उन्होंने मंच से अपना नाता तोड़ लिया था। वे एक साहित्यिक संस्था 'अन्तरा' के संस्थापक सदस्य थे, उनका अभिमत था कि काव्य गोष्ठी में कविता का सम्मान तथा रसास्वादन होता है मंच पर कविता असम्मानित होती है।

रामपुर तथा लखनऊ आकाशवाणी से उनके गीत निरन्तर प्रसारित होते रहते थे। सम्मान तथा अलंकरण 14 सितम्बर 1982 को 'राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति' मुरादाबाद ने इनका नागरिक अभिनन्दन किया था।

सन् 1984 में 'दधीचि हिन्दी साहित्य परिषद' सहारनुपर ने, जिसके संरक्षक पद्मश्री कन्हैया लाल मिश्र

प्रभाकर थे, इनके गीत संकलन 'आस्था के झरोखे से' को सर्वश्रेष्ठ कृति घोषित का 2500/– रू0 तथा कवि रत्न उपाधि से अलंकृत किया था।

4 अप्रैल 1993 को 'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, चान्दपुर' ने शॉल तथा 1100/–रू0 से सम्मानित किया।

डॉ0 महेश 'दिवाकर' और डॉ0 रामानन्द शर्मा रीडर हिन्दी विभाग हिन्दू कालेज मुरादाबाद ने 'कैलाशचन्द्र अग्रवाल' 'जीवन और काव्य दृष्टि' ग्रन्थ का सम्पादन किया है। 31 दिसम्बर 1996 को इस सरस्वती पुत्र का अनायास ही निधन हो गया।[6]

स्व0 बहोरी लाला शर्मा

कवि स्व0 बहोरी लाला शर्मा मुरादाबाद के उन गिने चुने कवियों में से थे जिन्हें 'सम्पूर्ण कवि' कहा जा सकता है।छन्द पर जितनी गहरी पकड़ उनकी थी उतनी कम ही कवियों की होती हे कविता उनके लिए जीवन थी। बहोरी लाल जी कविता लिखते नहीं थे बल्कि कविता जीते थे। जहाँ कविता जीवन–मरण का प्रश्न वहाँ उससे प्रतिबद्धता और गम्भीरता स्वयं जुड़ जाती है। जब कोई कवि प्रतिबद्ध हो और अपने रचनाकर्म के प्रति गम्भीर भी तब वह निश्चित ही एक सम्पूर्ण कवि कहे जाने का अधिकारी हो जाता है। बहोरी लाल शर्मा जी का जन्म बुलन्दशहर के ग्राम तौमड़ी में 20 जुलाई सन् 1928 को हुआ था। इनकी शैक्षिक योग्यता एम0ए0 (हिन्दी, संस्कृत), साहित्यरत्न, बी0टी0 थी। सन् 2005 में आपका निधन मुरादाबाद में हुआ।

साधारण शक्ल–सूरत, साधारण पहनावा, अपने ही विचारों और अपनी ही दुनिया में खोये हुए, बाहरी तौर पर यही बहोरी लाल जी की पहचान थी।उनका वैचारिक मंथन निरन्तर चलता रहता था। माँ शारदा की ऐसी कृपा थी उन पर एक के बाद एक कविता के भाव उनके मन–मस्तिष्क में घुमड़ते रहते थे। भाषा और भावों का अक्षय भण्डार था उनके भीतर। लगता ही नहीं था कि उनकी लेखनी थमेगी, मृत्युपर्यन्त उनकी लेखनी ने विराम नहीं लिया। 'सीताली' उनकी एकमात्र प्रकाशित कृति है।

उनके विराट रचनाकर्म के पीछे उनका व्यापक अध्ययन था। अध्यापक रहने के नाते अध्ययन–मनन बहोरी लाल जी का नित्य कर्म था और यह उन्हें विरासत में मिला था। वे बहुभाषाविद थे। खड़ी बोली सहित ब्रजभाषा, अवधी और उर्दू का भी उन्हें सम्यक ज्ञान था। बहुभाषाविद होने के कारण वे दूसरी भाषाओं के साहित्य का अनुशीलन कर पाये थे और इससे अंततः उनकी रचनाधर्मिता भी प्रभावित हुई, उनका साहित्य समृद्ध हुआ।[7]

बृजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग'

इनका जन्म 30 जून सन् 1933 में बदायूँ में हुआ था। इनकी शैक्षिक योग्यता एम0ए0 (हिन्दी, इतिहास, राजनीतिशास्त्र,अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र) तथा एल0एल0बी0 है। आंसू, हिन्दुत्व, विनाश की ओर, दर्पण मेरे गाँव का (लोक–महाकाव्य) तथा चांदनी (महाकाव्य) उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। सहज–सरल व्यक्तित्व के धनी गौतम जी का व्यक्तित्व जिनता ऋजुरेखीय है, कृतित्व उतना ही विराट और ऊधर्वगामी है। गौतम जी का रचना संसार एक अद्भुत केलिडोकोप है। जिसमें जीवन के विविध स्वरूप और रंग तो हैं ही, लोकजीवन भी अपनी पूर्ण भव्यता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। रचनाकार की दृष्टि से गौतम जी का कैनवस व्यापक है और वे लोकजीवन के कुशल चितेरे हैं। सही बात तो यह है कि गौतम जी के सृजन और रचनाधर्मिता को शब्दों में बाँधना या परिभाषित करना भी दृष्कर है।

गौतम जी को नगर में सहृदय, निरभिमानी और सरल व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। ऊँचे कद का कवि होने के बावजूद अहंकार उन्हें छू नहीं गया है। इस व्यक्ति की आत्मीयता और निश्छलता मन को कहीं गहरे छू लेती है। वे जब भी लोगों से मिलते हैं जीवन की किताब निःसंकोच खोल देते हैं, जीवन प्रसंगों का पिटारा अपने आप खुलता चला जाता है, कहीं कोई दुराव–छिपाव नहीं।

किन्तु उनके भीतर सदैव वाचाल बालक–सा एक कवि सोया रहता है जो अपनी कृतियों के माध्यम से निरंतर समकालीन समय और समाज से संवाद करता रहता है। गौतम जी के कवि व्यक्तित्त्व को समग्र रूप से समझने के लिए उनकी कृतियाँ ही सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। कवि मन की पीड़ा और अनुभूतियों से तादात्म्य स्थापित करने के लिए अनुराग गौतम जी की काव्य कृतियों का अवगाहन अपरिहार्य है।[8]

राजेन्द्र मोहन शर्मा ' श्रृंग '

किसी लेखक या रचनााकर के दो जगत होते हैं– एक बाह्य या स्थूल जगत, जो ईश्वर का रचा हुआ है और जिसमें वह भौतिक रूप में जीता है। दूसरा वह जो उसके भीतर होता है, उसका स्वयं का रचा हुआ यानी रचना जगत। इसमें वह स्वयं सृष्टिकर्ता यानी ईश्वर के समकक्ष होता है। ईश्वर के मन को समझना मुश्किल है किन्तु साहित्य एक ऐसा माध्यम अवश्य है जिसके द्वारा किसी साहित्यकार के मनोजगत या उसके रचना संसार का परिचय अवश्य पाया जाता है। एक बड़ा रचनाकार एक बड़े फलक पर विराट रचना संसार का सृजन करता है, वह सृजन के आनंद, उसकी पीड़ा और त्रासदी को समान रूप से भोगता है। ऐसे ही साहित्य के लौकिक ईश्वर है सुकवि राजेन्द्र मोहन शर्मा 'श्रृंग' इनका जन्म 12 जून सन् 1934 में चन्दौसी में हुआ था। इन्होंने हिन्दी में एम0ए0 किया है। अर्चना के गीत उल्लेखनीय कृति है। श्रृंग जी के सृजन में जीवन के विविध रंगों यथा–आनंद, उल्लास, पीड़ा और संत्रास के दर्शन होते हैं।

लेकिन श्रृंग जी समर्थ रचनाकार होते हुए भी कभी बड़ा सर्जक होने का भ्रम नहीं पालते। वे अपने को सर्दव माँ वीणा पाणि का एक विनम्र पुत्र ही स्वीकार करते हैं। शायद यूँ ही उन्होंने अपने प्रथम काव्य–संग्रह का नामकरण 'अर्चना के गीत' किया था और इसे माँ भारती के अमर गायक सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को समर्पित किया। उनकी प्रथम काव्यकृति का आवरण पृष्ठ ही इस तथ्य का परिचायक है कि वे सदैव माँ शारदा के उपासक रहे हैं। उन्होंने 'अर्चना के गीत', 'शकुन्तला' (खण्डकाव्य) की रचना की है।[8]

योगेन्द्रपाल सिंह विश्नोई

श्री योगेन्द्रपाल सिंह विश्नोई का जन्म 15 जुलाई उन्नीस सौ पैंतीस को श्री धर्मवीर सिंह विश्नोई के

घर ग्राम दूल्हापुर जिला मुरादबाद में हुआ था। आपने हिन्दीमें स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। आप रेलवे विभाग से टिकट निरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त होकर मुरादाबाद में स्थायी रूप से साहित्य सेवा कर रहे हैं। आपके दो काव्य–संग्रह 'आकाश भर आनन्द' और 'मौन सन्देशा' प्रकाशित हो चुके हैं।[9]

साहित्य सृजन आपके लिए समाज को दिशा देने के साथ–साथ आत्मिक उन्नति करने का साध्न भी है। कविता के द्वारा विश्नोई जी मानवता की स्थापना भी करते हैं और ईश्वर से भक्ति भी करते हैं।

शचीन्द्र भटनागर

शांत आकृति, अर्ध–निमीलित से नेत्र, धीर–गम्भीर स्वर– वे आधुनिक बुद्ध सरीखे नजर आते हैं– एक ऋषि, एक द्रष्टा और सबसे ऊपर एक कवि– अजातशत्रु अगर संक्षेप में उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करना हो तो संभवतया उपर्युक्त विशेषण ही उनके लिए उपयोग किये जा सकते हैं। एक निरन्तर परिवर्तनशील समय और क्षरणशील–पतनशील समाज में जबकि सच्चे अर्थों में 'आदमी' मिलने मुश्किल हो गये हैं वे एक महामानव कहे जा सकते हैं। एक ऐसा महामानव जो अधोपतन की शिकार भारत की आध्यात्मिक सांस्कृतिक थाती को पुर्नस्थापित करने के लिए निरन्तर चिन्तनरत और अपने ढंग से संघर्षरत भी रहता हैं उनके विराट व्यक्तित्व को शब्दों में बाँधना जरा मुश्किल काम है। ये हैं– मुरादाबाद के कवि शचीन्द्र भटनागर।

कवि शचीन्द्र भटनागर का जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद में 28 सितम्बर सन् 1935 को हुआ था। अंग्रेजी और हिन्दी में एम0ए0 तथा बी0टी0 इनकी शैक्षिक योग्यता है। 'खण्ड–खण्ड चाँदनी', 'हिरना लौट चलें', 'क्रान्ति के स्वर', 'तराहे पर', आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। इनका नाम मुरादाबाद के लोगों विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए नया जरूर हो सकता है किन्तु वे मुरादाबाद के लिए नये नहीं हैं। उनके जीवन का अधिकांश भाग यहीं जनपद के बहजोई नगर में व्यतीत हुआ है जहाँ वे एक विद्यालय में लम्बे समय तक अध्यापन से जुडे रहे। वे अट्ठाईस वर्षों तक इस विद्यालय में प्राचार्य भी रहे। लेकिन उनके कवि जीवन की शुरूआत पहले ही हो गया थी। वे छात्रावस्था में ही गीत और कवितायें रचने नगे थे। अपनी युवावस्था में वे आगरा के साहित्यिक जगत में विशेष रूप से सक्रिय थे जहाँ वे रांगेय राघव जैसे कथाकारों और सोम ठाकुर तथा द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी प्रभृति कवियों के निकट सम्पर्क में रहे।[10]

शिव अवतार रस्तोगी 'सरस'

शिव अवतार रस्तोगी 'सरस' का जन्म सम्भल में 4 जनवरी, 1939 को हुआ था। ये बाहर से जितने सरस हैं उतने ही भीतर से भी। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही रसमय है। उनका क्षणिक सान्निध्य भी रस से सराबोर कर देता है। उनका ऊर्जामय व्यक्तित्व किसी की भी निराशा को दूर कर सकता है। वे 'मनसा वाचा कर्मणा' सर्दव सक्रिय रहते हैं। नगर के सभी सामाजिक, साहित्यिक या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य भी होती है। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने नगर के साहित्यिक जगत में तेजी से स्थान बनाया है। यूँ तो उनके व्यक्तित्व के बहुत से पहलू हैं किन्तु नगरवासी उनके कवि व्यक्तित्व से ही अधिक परिचित हैं। साहित्य की कई विधाओं में उनकी गति है। वे अच्छे बाल कवि और जीवनी लेखक भी हैं। साहित्य उन्हें विरासत में प्राप्त हुआ है और वे हिन्दी को कई कृतियों का योगदान कर चुके हैं।

शिव अवतार रस्तौगी 'सरस' की शैक्षिक योग्यता एम0ए0, बी0टी0, साहित्यरत्न है। अभिनव मधुरशाला, हमारे कवि और लेखक, नोंक–झोंक आदि बाल–कविता संग्रह हैं। 'नोंक–झोंक', 'सरस संवादिकाएँ' उनकी प्रमुख कृति है। यह उनकी बत्तीस बाल कविताओं का संग्रह है।[11]

रामलाल 'अनजाना'

श्री रामलाल 'अनजाना' का जन्म 20 जून, 1939 में हुआ था। मुरादाबाद इनकी कर्मस्थली है।

रामलाल 'अनजाना' का एक व्यक्ति के रूप में जितने साधारण नजर आते हैं एक कवि या रचनाकार के रूप में उतने ही असाधारण हैं। आप उनसे तनिक बातें कर देखिए– उनकी काव्य प्रतिभा का अजस्र प्रवाह शुरू हो जायेगा। चकाचौंध, गगन न देगा साथ, सारे चेहरे मेरे आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। इनकी शैक्षिक योग्यता बी0कॉम0 है।

रामलाल 'अनजाना' प्रेम और मानवीयता के कवि हैं। बेहद संवेदनशील और मौलिक जीवन दृष्टि से लैस। उनके अनुभवों का संसार व्यापक है। वे अपने समय के यथार्थ को भली–भाँति जानते पहचानते हैं।[12]

माहेश्वरी तिवारी

सरल, मोहक और बेहद आत्मीय व्यक्तित्व। कभी होठों पर निरस्त्र कर देने वाली मुस्कान तो कभी वातावरण को गुंजारती निर्बन्ध हँसी। वे कभी जनमेजय की मुद्रा भी धारण कर लेते हैं। कभी वे पौराणिक आख्यानों के अर्धदेवता से प्रतीत होते हैं तो कभी ऐसे साधारण मनुष्य जो मानवीयता के नये अर्थ तलाशता हुआ निरन्तर मनुष्यतर होने का यत्न करता रहता है। बहुत सारे विरोधाभासों के चलते भी माहेश्वर तिवारी के व्यक्तित्व में एक अनोखा संतुलन दिखायी पड़ता है। विचारों और भावों का ऐसा संतुलन सचमुच अत्यन्त दुर्लभ है। वे जितने बड़े कवि या रचनाकार हैं उतने ही बड़े विचारक भी। शायद यूँ ही वे अपने समकालीन गीतकारों की तुलना में कहीं अलग और विशिष्ट जान पड़ते हैं। वे अपने समय के चुनिंदा अध्ययन–मननशील कवियों में से एक हैं, वे जितना अध्ययन करते हैं उससे ज्यादा कहीं मनन करते हैं। किन्तु वे निरे बुद्धिवादी भी नहीं हैं। इनका जन्म बस्ती जनपद के मलौली ग्राम में 22 जुलाई सन् 1939 में हुआ था। इन्होने एम0ए0 हिन्दी से किया। इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ एक सप्तक और, पाँच जोड़ा बाँसुरी, हर सिंगार कोई तो हो, सच की कोई शर्त नहीं आदि हैं।

एक कवि के रूप में माहेश्वर तिवारी को परिभाषित करना तो और भी मुश्किल है। यूँ घोषित रूप में वे डॉ0 शम्भुनाथ सिंह के सम्पादन में प्रकाशित नवगीत दशक भाग दो के नवगीतकार हैं। वे समकालीन नवगीतकार के शायद सबसे बड़े हस्ताक्षर हैं। या फिर

नवगीत के ऐसे दावेदार जो शब्द शस्त्रों की चोट लगातार सहने के बावजूद अपना सिंर नही झुकाता।[13]

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

इनका जन्म बिजनौर जनपद के ग्राम झुझैला, फीना में 20 नवम्बर, 1939 को हुआ था। इन्होंने एम0ए0 की परीक्षा हिन्दी, इतिहास, समाजशास्त्र और साहित्यरत्न से की। इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ–बाँध सर कफन चलो, दयानन्द, महिमा, दयानन्द सप्तक, प्रभु को नमन हमारा, मंगल सूत्र, बन्दा बैरागी आदि हैं।

पेशे से अध्यापक और वृत्ति के साहित्यकार वीरेन्द्र नगर में वीर रस के प्रमुख कवि हैं। बेहद विनम्र और बहुधा शांत रहने वाले वीरेन्द्र राजपूत अपने साहित्य, विशेषकर वीर–रस की रचनाओं, में एक नितान्त भिन्न किस्म के रचनाकार और अलग तेवर के कवि नजर आते हैं। लगता है इस कवि के अन्दर एक धधकता हुआ ज्वालामुखी सतत् क्रियाशील रहता है। जिसका लावा वीर–रस की रचनाओं के रूप में फूटता रहता है।

वीरेन्द्र जी छन्दबद्ध काव्य के पक्षधर हैं और काव्य की विविध विधाओं में उन्होंने सृजन किया है। लगभग सभी रस उनके साहित्य में विद्यामान हैं किन्तु उनका कवि रूप तभी सबसे अधिक निखार पर होता है जब वे वीरत्तव से ओत–प्रोत काव्य रच रहे होते हैं। दरअसल, वीर–रस की रचनाओं में ही हमें वीरेन्द्र जी के वास्तविक कवि के दर्शन होते हैं और उनके समग्र काव्य को वीरता के रूप में रेखांकित किया जा सकता है।[14]

सतीश कुमार 'फिग़ार'

आपका जन्म 25 जनवरी सन् 1941 ई0 को हुआ था। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् एल0एल0बी0 की डिग्री हासिल की।

वे एक अनूठे सर्जक हैं। अनूठे इस अर्थ में वे साहित्य को एक अद्भुत गाइरोस्कोप के रूप में इस्तेमाल करते हैं जिसमें गति है, तरंगे हैं और प्रवाह है। नगर के कवि सतीश कुमार गुप्ता, जो कि फिगार मुरादाबादी के नाम से अधिक पहचाने जाते हैं, के साहित्य का आवगाहन सचमुच एक विलक्षण अनुभव होता है।

मुरादाबाद नगर में फ़िगार मुरादाबादी को एक शायर के रूप में भी पहचाना जाता है। ऐसा शायद इसलिए है कि वे हिन्दी काव्य में प्रवृत्त होने से पहले उर्दू में शायरी करते रहे हैं। उर्दू में उनके तीन काव्य संग्रह 'फिक्रेक जमील' 'ख्वाबे परेशाँ' और 'अक्से जमाल' प्रकाशित भी हो चुके हैं। जिनकी लिपि उर्दू है। इनमें 'फिक्रे जीमल' का हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। मूलतया उनके संस्कार हिन्दी के हैं इसलिए हिन्दी से अपने आप को असंपृक्त रखना फ़िगार साहब के लिए सचमुच कठिन है। अब जीवन की सांध्य बोल में ही सही वे हिन्दी भाषा में काव्य सृजन के लिए प्रेरित हुए हैं और छंद का निर्वाह करते हुए उत्कृष्ट साहित्य का सृजन कर रहे हैं।[15]

रघुराज सिंह 'निश्चल'

रघुराज सिंह 'निश्चल' का जन्म 17 जुलाई सन् 1942 को हुआ था। यह बाल रचनाओं के साथ–साथ देशभक्ति की रचनाओं के भी कवि हैं। इनकी शैक्षिक योगयता इन्टरमीडिएट है। यद्यपि 'निश्चल' जी कोई जाने–माने बाल साहित्यकार नहीं हैं किन्तु अपनी बाल कविताओं में उन्होंने बाल मनोभावों को जो अभिव्यक्ति दी थी वह बाल मनोविज्ञान पर उनकी पकड़ और परख को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। 'निश्चल' जी का साहित्य जीवन कोई बहुत पुराना नहीं है। भारतीयरेल सेवा से अवकाश के बाद उन्होंने साहित्यिक जगत में समर्पण भाव से पर्दापण किय है। किन्तु देर से आगमन के बाद भी उनकी रचनाओं में वैचारिक स्तर पर पर्याप्त गंभीरता के दर्शन होते हैं। 'निश्चल' जी की रचनाओं में हल्कापन कहीं नहीं है बल्कि सर्वत्र एक परिपक्वता है। यह परिपक्वता उनके व्यापक जीवनानुभावों से जन्मी है और अनायास नहीं है।

साहित्य की दूसरी विधाओं के समानान्तर 'निश्चल' जी ने बालकाव्य के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी का जादू जगाया है। बहुत अधिक बाल कविताओं की रचना 'निश्चल' जी ने नहीं की है किन्तु वे इस विधा में भी रचते हैं साधिकार रचते हैं। उनकी बाल कविताओं में अद्भुत तरलता और प्रवाहमयता है जो उनके समकालीन बाल साहित्यकारों में सिर्फ 'दिग्गज' मुरादाबादी जैसे समर्थ रचनाकार में ही दिखायी पड़ती है।[16]

अशोक विश्नोई

आपका जन्म 10 अक्टूबर 1945 ई0 को हुआ था। आपने एम0ए0 समाजशास्त्र तथा इतिहास में किया इसके बाद बी0एड0 की परीक्षा पास की। आप बहुत महान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं।

आप हर कोण से एक सम्पादक नजर आते हैं– धीर–गंभीर आकृति, आँखों पर मोटाचश्मा, कुर्ता–पाजामा और कभी–कभी हाथ में एक ब्रीफकेस जिसमें उनके प्रकाशन की किताबों का ढेर सा पुलिन्दा होताहै और जरूरी कागजात। लेकिन नगर के लोकप्रिय सम्पादक अशोक विश्नोई की यही पहचान नहीं है। वे सम्पादक के इतर और भी बहुत कुछ हैं। एक संवेदनशील कवि, कथाकार और हद तक एक समीक्षक भी। कुल मिलाकर एक ऐसे साहित्यकार जिनके हृदय में न केवल शोषितों के प्रतिव्यापक सहनुभूति है बल्कि उनके संघर्ष को आवाज़ देने की सामर्थ्य भी। उनके भीतर सामाजिक विसंगतियों के प्रति विक्षोभ है और अन्याय के प्रति रोष भी। वे मानवीय संवेदनाओं के चितेरे और जनपक्षधरता के साहित्यकार हैं।[17]

शम्भु दयाल गुप्त

शम्भु दयाल गुप्त का जन्म 26 जुलाई 1946 को जरगाँव, मुरादाबाद में हुआ था। आपके पिता डॉ0 रघुनाथ प्रसाद गुप्त थे। आपने बी0ए0 तक शिक्षा ली तथा पुस्तकालय विज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने हिन्दी पद्य साहित्य में सृजन कार्य किया हैं आपकी रचनाएँ अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। आपके एक काव्य–पाठ का प्रसारण आकाशवाणी, रामपुर से भी किया गया। आपका एक काव्य संग्रह 'कंचन–कलश' प्रकाशित हो चुका है। सम्प्रति आप महानगर के महाविद्यालय के0जी0के0 कालिज में पुस्तकालयाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।[18]

'पुष्पेन्द्र' वर्णवाल

'पुष्पेन्द्र' जी का जन्म 4 नवम्बर, 1946 को हुआ था। इन्होंने एम0ए0 हिन्दी किया है। अभीक, ऋषि, प्रणयदीर्घा, प्रणय बन्ध, प्रणय प्रतीति, शब्द मौन आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। 'पुष्पेन्द्र' जी एक ऐसे सर्जक या स्रष्टा हैं जो नया रचने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। उन्होंने जीवन के व्यापक अनुभवों और विलक्षण संवेदनाशीलता के धरातल पर एक विराट और भव्य संसार रचा है। रचना उनके लिए यातना नहीं बल्कि आह्लादकारी अनुभव है और यह दिव्यानुभूति ही उन्हें सदैव नया रचने के लिए प्रेरित करती है।

'पुष्पेन्द्र' जी एक प्रखर वक्ता हैं जो खरी–खरी बातों के लिए मशहूर हैं, लेकिन बड़बोले नहीं हैं। उन्हें तर्कों के जरिये काटना मुश्किल है। वे तर्कों एवं संदर्भों के अक्षय भण्डार हैं। एक बार उनसे चर्चा छेड़िये फिर 'पुष्पेन्द्र' जी के अगाध ज्ञान का पिटारा खुलता ही चला जायेगा। अब यह पात्र के ऊपर निर्भर है कि वह उसमें से कितना ग्रहण कर पाता है किन्तु 'पुष्पेन्द्र' जी की ओर से कोई कृपणता नहीं होगी। वे सदैव आत्मीयता से मिलते हैं और स्नेहशील भी हैं।

डॉ0 प्रेमवती उपाध्याय

डॉ0 प्रेमवती उपाध्याय का जन्म रामपुर जनपद के ग्राम डोहरिया, शाहबाद में 17 फरवरी सन् 1947 को हुआ था। इन्होंने अंग्रेजी में एम0ए0 तथा बी0एम0एस0 उपाधी प्राप्त की। उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ– मातृ–स्मृति (लघु पुस्तिका) तुम्हारे लिए (काव्य–संग्रह) आदि हैं। डॉ0 प्रेमवती उपाध्याय जी का सुरीला स्वर सचमुच जादू कर देता है। जब वे अपना कोई गीत शुरू करती हैं तो स्वयं माँ शारदा ने अपनी वीणा के तार झंकृत कर दिये हैं। शब्दों की एक अद्भुत निर्झरिणी कल–कल निनाद करती बहने लगती है। श्रोता स्वरों के आरोह–अवरोह के साथ डूबने–उतरने लगते हैं। उदात्त भावनाओं और कोमल संवेदनाओं की कवयित्री होने के कारण वे मुरादाबाद की सरोजनी नायडू अवश्य कही जा सकती हैं।

प्रेमवती जी की पहचान मुख्यतया एक गीतकार के रूप में है। उनके गीत हृदय की सघनतम और कोमलतम अभिव्यक्ति का सहज उद्रेक है। उनके गीत सप्रयास नहीं बल्कि अनायास रचे गये हैं इसलिए उनमें जो स्वाभाविकता और प्रवाहमयता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनमें कृत्रिमता का लेश भी नहीं है।

बीसवींशती उत्तरार्द्ध के प्रमुख रचनाकार और उनकी प्रमुख कृतियां

डॉ0 अजय 'अनुपम'

डॉ0 अजय 'अनुपम' का जन्म 11 जुलाई सन् 1938 में साहू जगदीशशरण अग्रवाल के घर में हुआ था। आपका परिवार रेती स्ट्रीट में 'मिर्च वालों' के नाम से प्रसिद्ध है। आपने राजनीतिशास्त्र व इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। इतिहास में पी–एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की तथा वर्तमान में एक इण्टर कालिज में इतिहास के प्रवक्ता हैं।

साहित्य के क्षेत्र में आपकी ख्याति एक गीतकार के रूप में है। आप मूलतः श्रृंगारिक गीतकार हैं। आपके मुक्तक श्रृंगार के उत्कृष्ट नमूने हैं। 'आभास' आपकी मुक्तकसंग्रह है। आपके गीतों में रीतिकालीन चमत्कारिता सम्पूर्ण शालीनता के साथ विद्यमान है। आपकी सम्पादित कृतियाँ हैं–

1. गाँधी स्मरणिका,
2. अन्नपूर्णादर्शन अनुशीलन,
3. अभिनन्दनीय व्यक्तित्व वीरेन्द्र गुप्तः,
4. संस्कार दीपिका,
5. रामराज्य पत्रिका,
6. सीपज,
7. महेन्द्र मंजूषा।

आपने 'गोधन' पुस्तिका का हिन्दी में काव्यनुवाद किया है।

ओंकार सिंह 'ओंकार'

इनका जन्म जनपद मुरादाबाद के ग्राम चंगेरी में 4 जुलाई सन् 1950 ई0 में हुआ था। इनकी शैक्षिक योग्यता इण्टरमीडिएट थी। संसार हमारा है इनकी उल्लेखनीय कृति है। आपकी कृतियाँ अभी अप्रकाशित हैं।

दरअसल, ओंकार जी सूक्ष्म अनुभूतियों और व्यापक संवेदनाओं के कवि हैं। वे इतने संवेदनशील कवि हैं।

वीरेनद्र सिंह 'ब्रजवासी'

वीरेन्द्र सिंह 'ब्रजवासी' का जन्म जनवरी 1951 में हुआ था। इनकी शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल है। समर्पण इनकी उल्लेखनीय कृति है। 'ब्रजवासी' उपनाम से ख्यात वीरेन्द्र जी माँ वीणापाणि के वरद पुत्र तो हैं ही काव्य और माधुर्य का अनोखा सामंजस्य भी उनमें दिखाई पड़ता है जो अन्यत्र दुर्लभ है।

नगर में 'ब्रजवासी' जी की पहचान गीत, ग़जल, कविता और मुक्तक के रचनाकार के रूप में है। किन्तु वे अपने ब्रजगीतों के लिए अधिक जाने जाते हैं। यह शायद ब्रज क्षेत्र की मिट्टी या परम्पराओं का प्रभाव है कि ब्रजगीतों में एक स्वाभाविक मिठास है।[19]

डॉ0 महेश 'दिवाकर'

डॉ0 महेश 'दिवाकर' का जन्म 25 जनवरी, सन् 1952 को ग्राम महलकपुर मॉफी, देहली राष्ट्रीय राजमार्ग, पत्रालय–पाकबड़ा, जनपद मुरादाबाद निवासी स्व0 ठाकुर दीप पंवार के ज्येष्ठ पौत्र के रूप में हुआ। आपके पिताश्री स्व0ठाकुर कृपाल सिंह पंवार एक आदर्श कृषक थे और माता देवी आचार विचार से धार्मिक महिला हैं।

इनका वास्तविक नाम 'महेश चन्द्र' है और 'दिवाकर' इनका साहित्यिक नाम है। इन्होंने के0जी0के0 महाविद्यालय, मुरादाबाद से स्नातक और स्नातकोत्तर (हिन्दी व अंग्रेजी) की उपाधियाँ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से प्राप्त की हैं। तत्पश्चात पी–एच0डी0 (हिन्दी) और डी0 लिट0 (हिन्दी) की सर्वोच्च शैक्षिक उपाधियाँ महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से उत्तीर्ण की है। इनकी सहधर्मिणी डॉ0 (श्रमती) चन्द्रा पंवार, एम0 ए0 (समाजशास्त्र एवं हिन्दी), बी0एड0, पी–एच0डी0 (हिन्दी) उपाधियों से युक्त आदर्श गृहणी हैं।

सम्प्रति डॉ0 महेश 'दिवाकर' गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चाँदपुर (बिजनौर) उत्तर प्रदेश के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष, रीडर एवं शोध निदेशक हैं।

अनेक छात्र–छात्राएँ इनके निर्देशन में शोध उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं और कई शोध कार्य कर रहे हैं।

कविता, नई कविता, गीत, मुक्तक, दोहा, कहानी, निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, शोध, समीक्षा, जीवनी, साक्षात्कार, सम्पादन, अनुवाद, पत्रकारिता इनकी लेखन विधाएँ हैं। इनका प्रकाशित साहित्य प्रकार है–

खण्डकाव्य

1. वीरबाला कुँवर अजबदे पंवार
2. महासाध्वी अपाला

गीत–संग्रह

1. भावना का मंदिर
2. आस्था के फूल

नई कविता–संग्रह

1. अन्याय के विरूद्ध
2. कालभेद

दोहा मुक्तक संग्रह

1. पथ की अनुभूतियाँ
2. युवकों सोचो,
3. विविधा
4. सूत्रधार है मौन

समीक्षात्मक कृति

1. सर्वेश्वर कविता लोक

शोध ग्रंथ पी–एच0डी0 हेतु हिन्दी नई कविता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डी0लिट्0 हेतु बीसवीं शती की हिन्दी कहानी का समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन

सम्पादित कृतियाँ

1. 'विद्यापति वाग्विलास',
2. 'तुलसी वांग्मय विमर्श',
3. 'विद्यापति सुधा'
4. 'स्व0 कैलाश चन्द्र अग्रवालः जीवन और काव्य–सृष्टि',
5. 'यादो के आर–पार',
6. 'प्रणय गंधा',
7. 'प्रेरणा के दीप',
8. 'अतीतकी परछाइयाँ',
9. 'नेह के सरसिज',
10. 'नूतन दोहावली',
11. 'काव्यधारा',
12. 'बाल सुमनों के नाम',
13. 'एकांकी संकलन',
14. 'समय की शिला पर',
15. 'आजू–राजू',
16. 'नन्हें मुन्ने',
17. 'वंदेमात्रम',
18. 'साहित्यकार बाबू सिंह चौहान : अभिनन्दन ग्रंथ',
19. 'प्रो0 विश्वनाथ शुक्ल : एक शिव–संकल्प',
20. 'रूहेलखण्ड के स्वातंत्रयोत्तर प्रमुख साहित्यकार',
21. 'भारत की हिन्दी सेवी प्रमुख संस्थाएँ',
22. 'गीतकार गंधर्व सिंह तोमर 'चाचा' : अभिन्नदन ग्रंथ',
23. 'नयी शती के नाम',
24. 'प्रो0 राम प्रकाश गोयल : अभिनन्दन ग्रंथ',
25. 'पीलीभीत के गौरव, स्व0 डॉ0 रामकुार वर्मा : स्मृति ग्रंथ',
26. 'अभिव्यक्ति समाज और वांडग्मय',
27. 'क्या कह कर पुकारू'।

अनेक पत्र–पत्रिकाओं में इनकी असंख्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। ये 'राजकुल' (हिन्दी मासिक), दिल्ली और 'भाववीथिका' (द्वैमासिक) चन्दक, बिजनौर (उ0प्र0) के उप–सम्पादक भी हैं, और कई पत्रिकाओं तथा साहित्यिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य भी हैं।

ये राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त साहित्यिक संस्था– 'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच', के 'संस्थापक अध्यक्ष' हैं। जिसका मुख्यालय– मुरादाबाद (उ0प्र0) हैं।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवा के लिए इनको देश–विदेश की अनेक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाओं ने 'साहित्य श्री', 'शिक्षा श्री', 'विद्यालंकार', 'काव्य श्री', 'संस्कृति सम्मान', 'साहित्य शिरोमणि सम्मान', 'साहित्य साधना सम्मान', 'कवि कोकिल सम्मानोपाधि', 'साहित्य गौरव', 'काव्य–गौरव', साहित्यकार सम्मान, साहित्य साधना सम्मान' और प्रशस्ति पत्रों से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है। इनका वर्तमान पता है– 'सरस्वती', मिलन–विहार, देहली रोड़, मुरादाबाद (उ0प्र0)[20]

अम्बरीष कुमार गर्ग

''वह आदमी जिसकी बगल में बैसाखियाँ हैं
लोगों की निगाह में लगडा है।
लोग समझते हैं वह आदमी
बैसाखियों के सहारे ही चल रहा है।
जबकि असलियत यह है कि
हमेशा बैसाखियाँ ही उसके सहारे चलती हैं।
यही कारण है कि बैसाखियाँ बदलती रहती हैं
आदमी नहीं बदलता
गतिशीलता बैसाखियों में नहीं, आदमी में होती है।

यह पंक्तियाँ ऊपरी तौर पर भले ही साधारण प्रतीत होती हों किन्तु इसमें एक बड़े कवि की आहट महसूस होती है। इन पंक्तियों के रचयिता कवि अम्बरीश कुमार का शिल्प जरूर साधारण है किन्तु कथ्य के स्तर पर वे कुँवर नारायण जैसा महत्वपूर्ण कवि होने की संभावनाएं जगाते हैं। इनका जन्म जनपद मेरठ के ग्राम खामपुर में 18 दिसम्बर, 1953 को हुआ था। इन्होंने एम0ए0 तथा एम0एड0 की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। 'आदमी का सच' इनकी उल्लेखनीय कृति है।

दरअसल, अम्बरीश जी की कविताओं में कथ्य ही महत्वपूर्ण है, शिल्प गौण है। वे अपनी बात सीधे पाठक तक पहुँचाने में यकीन रखते हैं। इसलिए शिल्पके प्रति अधिक सचेत नहीं रहते। उनकी कविताओं में औपचारिकता के लिए ही शिल्प का निर्वाह किया गया है, वास्तविक लक्ष्य तो पाठकों को यथार्थ के प्रत्यक्ष अवलोकन सेउपजी अनुभूतियों में सहभागी बनाना होता है। शायद यूँ ही उनकी कवितायें अक्सर सपाटबयानी की शिकार हुई हैं किन्तु पाठक के अवचेतन पर वे धूमिल जैसे समर्थ कवि की तरह गहरा प्रभाव छोड़ने में सक्षम हैं।[21]

राकेश 'चक्र'

श्री राकेश 'चक्र' का जन्म 14 नवम्बर, उन्नीस सौ पचपन मे ग्राम ताजपुर जिला अलीगढ़ में श्री

धीरजलाल जी के घर में हुआ था। आपने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। आप विधि स्नातक हैं। सम्प्रति आप उ0प्र0 पुलिस के अभिसूचना विभाग में कार्यरत हैं। आपका पिकवास मुरादाबाद के मौहल्ला शिवपुरी में है। आपके तीन कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त उपन्यास, कहानी संग्रह व तीस से अधिक बाल व किशोर कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपने अपनी रचनाओं में भोगा हुआ यथार्थ ही चित्रित किया है। आपकी रचनाओं से प्रतीत होता है मानों आप समय के साथ संवाद कर रहे हैं। उनकी रचनाओं में विगत की सच्चाई तथा आगत की आहट सुनाई देती है।[22]

कृष्ण कुमार 'नाज'

श्री कृष्ण कुमार 'नाज' का जन्म 10 जनवरी, उन्नीस सौ इकसठ को भी रामगोपाल वर्मा के घर में ग्राम कुरीरवाना, जनपद मुरादाबाद में हुआ था। आपने समाजशास्त्र तथा उर्दू विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करके बी0एड0 का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। हिन्दी में आपके दो काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'गुनगनी धूप' आपका गजल–संग्रह है तथा 'मन की सतह पर' आप का गीत संग्रह है। सम्प्रति आप सरकारी कर्मचारी हैं।

साहित्य के क्षेत्र में आपकी रचनाऐं अपनी प्रथक पहचान बना चुकी हैं। आपकी रचनाओं में प्रेम और सौन्दर्य के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं का भी स्पर्श किया गया है। सामाजिक सरोकार भी उनकी रचनाओं में विद्यामान है। आपकी गजलें मात्र इश्क की शायरी ही नहीं हैं, वरन आम आदमी की मजबूरियों का चिन्तन भी उनमें है। आपकी रचनाऐं अपने युग का चित्रण हैं। उनमें शाश्वत मूल्यों की रक्षा का संकल्प है।

विवेक 'निर्मल'

श्री विवेक निर्मल का जन्म 30 अप्रैल उन्नीस सौ छियासठ को गौहावर, जनपद बिजनौर में श्री ब्रजपालसरन जी के परिवार में हुआ था। वर्तमान में आप मुरादाबाद कचहरी में स्टाम्प विक्रेता हैं तथा दीनदयाल नगर, मुरादाबाद में आपका निवास है।आपने इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की है।

आप अनेक साहित्यिक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। इनमें प्रमुख संस्थाऐं हैं– भारतीय साहित्य परिषद, मुरादाबाद, मानव उत्थान समिति मुरादाबाद, अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, कबीर शान्ति मिशन, 'प्रमाण' साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था, मुरादाबाद। आपने 'संस्कृति' स्मारिका एवं 'आकार' पत्रिका में प्रबन्ध सम्पादक के रूप में कार्य किया है।

साहित्य के क्षेत्र में आप एक सफल गीतकार हैं। आपकी रचनाऐं सामयिक, सामाजिक, राजनैतिक व पारिवारिक रिश्तों को लेकर लिखी गयी हैं। रिश्तों की गहराई, राष्ट्रीय चिन्तन तथा सामाजिक सरोकार अपकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं। अनेक प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाऐं प्रकाशित हो चुकी हैं।

निष्कर्ष

मुरादाबाद जनपद की काव्यधारा मुख्य रूप से राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा है। इसमें स्वतन्त्रता से पूर्व और पश्चात साहित्य साधकों की सुदीर्घ परम्परा विद्यमान है। रंगमंच के माध्यम से मुरादाबाद वासियों ने अपने लोक–साहित्य को उत्कर्ष प्रदान किया है। पुरूषों के समान ही यहाँ की नारियाँ भी साहित्य सृजन में सदा आगे रही हैं। लोक मंगल का मधुर स्वर मुरादाबाद की काव्य–धारा में प्रारम्भ से लेकर अब तक सतत निनादित है। मुरादाबाद के बहुत से साहित्यकारों का परिचय अज्ञात है, ऐसे साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय 'परिशिष्ट' में दिया गया है।

पूर्व पीढ़ियों की समृद्ध साधना–विरासत को संजोये हुए वर्तमान पीढ़ी में शताधिक रचनाकार मुरादाबाद में रहकर सृजन–साधना कर रहे हैं। इनकी साधना–दिशा देश प्रेम, वसुधैव कुटुम्बकम्, विश्वशान्ति, प्रेम, सौन्दर्य, ईश्वर–भक्ति, जन–चेतना तथा आधुनिक भाव बोध आदि अनेक आयामों से सविन्यस्त है। अनेक साहित्यिक संस्थाऐं मुरादाबाद की धरती से साहित्य सृजन को निरन्तर प्रोत्साहित कर रही हैं। यहाँ से प्रकाशित होने वाले काव्य संकलन इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। सामान्य : मुरादाबाद जनपद का साहित्यिक वातावरण स्वस्थ्य और सतत सृजनात्मक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पं0 दुर्गादत्त त्रिपाठी, 'कल्पदुहा', भमिका से*
2. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 105*
3. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 109*
4. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 117*
5. *तरंगिणी फ्लैप से*
6. *कैलाश चन्द्र अग्रवाल : जीवन और काव्य दृष्टि, भूमिका से*
7. *सं0 संजीव सक्सैना, 'समय की रेत पर', पृ0 121*
8. *सं0 संजीव सक्सैना, 'समय की रेत पर', पृ0 29*
9. *डॉ0 महेश 'दिवाकर' 'रूहेलखण्ड के स्वातन्त्रयोत्तर प्रमुख साहित्यकार', पृ0 92*
10. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 37*
11. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 41*
12. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 49*
13. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 53*
14. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 57*
15. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 61*
16. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 65*
17. *अशोक विश्नोई, 'संकेत', पृ0 98*
18. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 73*
19. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 85*
20. *डॉ0 महेश 'दिवाकर' 'रूहेलखण्ड के स्वातन्त्रयोत्तर प्रमुख साहित्यकार', पृ0 78*
21. *सं0 संजीव सक्सेना, 'समय की रेत पर', पृ0 93*
22. *साहित्यकार के साक्षात्कार पर आधारित*